IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

Uttarkhand Ke Sanskrutik Lokachar Ki Prushbhumi Me Dr. Ramesh Pokhriyal "Nishank" Ke Gadhya Sahitya Mein Mahilao Ka Pratinidhitva, Netrutva Evam Sangharsh

शोधार्थी – हेमलता पोखरियाल
स्पर्श हिमालयीय विश्वविद्यालय, देहरादून।
विभाग – हिन्दी
शोध निर्देशिका – डा0 मनीषा अग्रवाल (आ0 प्रोफेसर)
स्पर्श हिमालयीय विश्वविद्यालय, देहरादून। विभाग – हिन्दी

अमूर्त

राजनीतिक संघर्ष, बदलते विचार और महिलाओं की समान भागीदारी के प्रमाण देने के प्रयासों सहित कई कारकों ने पिछली दो शताब्दियों में महिला शब्द को बदलने में योगदान दिया है। यद्यपि प्राचीन काल से ही दुनिया के कई हिस्सों में पुरुषों ने महिलाओं को चित्रित किया है और उन्हें स्वीकार किया है, स्वतंत्र भारत का संविधान यह सुनिश्चित करता है, कि महिलाएं कानून के समक्ष समान हैं। किशोर स्वास्थ्य, महिला जननांग काटने, बाल विवाह और अंतरंग साथी दुर्व्यवहार सहित मुद्दों पर सामाजिक मानदंडों के सिद्धांत को लागू करने के परिणाम स्वरूप निम्न और मध्यम आय वाले देशों (एलएमआईसी) में महिलाओं पर एक विशिष्ट तरीके से व्यवहार करने के लिए संरचनात्मक दबाव पैदा हुआ है। साहित्य में महिलाओं और लिंग भूमिकाओं के प्रतिनिधित्व के आसपास की सांस्कृतिक जटिलता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए, यह अध्ययन उत्तराखंड की लोक–कथाओं की जांच करता है और वे महिलाओं और लिंग भूमिकाओं को कैसे चित्रित करते हैं। इस शोध का उद्देश्य उत्तराखंडी लोक–कथाओं में महिलाओं की पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं पर गौर करना, समग्र संस्कृति के हिस्से के रूप में महिलाओं की संस्कृति का पता लगाना और यह जानना है कि उत्तराखंड में समकालीन महिलाएं किस तरह अपनी सामाजिक भूमिकाओं को चुनौती दे रही हैं और बदल रही हैं। इस शोध पत्र का उद्देश्य साहित्य में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर पुनर्विचार और पुनर्मूल्यांकन करके महिला संस्कृति को उजागर करना था। यह उत्तराखंड में पहाड़ी महिलाओं के जीवन पर प्रकाश डालता है और व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से उनकी ताकत को उजागर करता है। तीसरे और दूसरे अध्याय अध्ययन से पता चलता है कि जहां पुरुष असफल होते हैं, वहां महिलाएं कैसे सफल हो सकती हैं, जैसे डुंगरी–पैतोली और डॉ. "निशंक" के काम में। जब विकास सहयोग की बात आती है, तो लैंगिक समानता को बढ़ावा देने में सांस्कृतिक पहलू बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। विभिन्न संस्कृतियों में और समय के साथ लैंगिक संबंधों में काफी जटिलता और बदलाव आया है। परिवार नियोजन और बाजार अर्थव्यवस्थाओं में संक्रमण सहित

सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण दृष्टिकोण और प्रथाएं, विकास परियोजनाओं में निवेश से प्रभावित हो सकती हैं, जो आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देना चाहती हैं।

कीवर्ड उत्तराखंड, महिलाएं, लिंग भूमिका, सामाजिक मानदंड, संस्कृति

परिचय

महिला शब्द का प्रयोग अक्सर मानव आबादी के एक निश्चित उपसमूह को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, जो उनके जैविक लिंग के साथ–साथ सामाजिक रूप से अपेक्षित व्यवहार, जीवनशैली विकल्पों और पारिवारिक दायित्वों द्वारा परिभाषित होता है। हालाँकि, करीब से निरीक्षण करने पर, यह स्पष्ट हो जाता है कि महिला एक संज्ञा से कहीं अधिक है। यह दो सौ वर्षों तक फैली एक विकसित होती धारणा है। महिलाओं की समान भागीदारी की गारंटी देने के प्रयासों के साथ–साथ अन्य मान्यताओं और राजनीतिक लड़ाइयों ने इस विकास को प्रभावित किया है। एक ऐसा दस्तावेज जो कानून के समक्ष महिलाओं की समानता की गारंटी देता है वह स्वतंत्र भारत का संविधान है। सभी प्रयासों के बावजूद, महिलाओं की मुक्ति अभी भी महत्वपूर्ण सामाजिक बाधाओं से बाधित है। महिलाओं की ऐतिहासिक और वर्तमान सामाजिक स्थिति को देखने से इसके अंतर्निहित कारणों पर प्रकाश पड़ सकता है। श्औरतश एक शब्द से कहीं अधिक हैय यह कई पहलुओं वाला एक उभरता हुआ विचार है।

प्रागैतिहासिक काल से ही दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों द्वारा महिलाओं को चित्रित और मान्यता दी जाती रही है। सिमोन डी बेवॉयर की 2011 की किताब सेकेंड सेक्स के अनुसार, एक महिला का जन्म नहीं होता है, बल्कि वह कायापलट की प्रक्रिया से गुजरती है। जैविक पुरुषों और महिलाओं पर थोपी गई लिंग भूमिकाओं के संदर्भ में पुरुषों को आदर्श और महिलाओं को अपवाद माना गया है। मनु की हिंदू संहिता (मनुस्मृति, अंग्रेजी अनुवाद के साथ संस्कृत, 2016) के अनुसार, एक महिला कम उम्र से ही अपने पिता, पति और बेटों के प्रति समर्पित होने के लिए बाध्य है और उसे कभी भी स्वतंत्रता की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए। महिलाओं पर एक निश्चित तरीके से कार्य करने का सामाजिक दबाव होता है। उत्तराखंड की लोक गायिका बसंती बिष्ट बताती हैं कि जब उनकी शादी हुई तो उनके परिवार ने उन्हें प्रदर्शन करने से मना कर दिया और उनसे घर का काम और बच्चे की देखभाल कराई गई (बिष्ट, 2017)। लेकिन महिलाएं इस प्रथागत स्थिति पर विवाद करने वाली नहीं रही हैं।

बाल विवाह और अंतरंग साथी हिंसा (मैकी एट अल) सहित समस्याओं के लिए सामाजिक मानदंडों के सिद्धांत के अनुप्रयोग के साथ निम्न और मध्यम आय वाले देशों (एलएमआईसी) में स्वास्थ्य संबंधी तरीकों में एक आदर्श परिवर्तन हुआ है। 2015).

कार्यस्थल पर समानता और न्याय स्थापित करने के लिए यह समझने की आवश्यकता है कि लिंग बातचीत को कैसे प्रभावित करता है। लिंग और सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने वाले शोधकर्ताओं ने महिलाओं के आंतरिक लक्षणों (मैकोबी और जैकलिन, 1974 ईगली और करौ, 2002) का अध्ययन करने से लेकर महिलाओं पर सामाजिक रूढ़िवादिता और निषेधात्मक लिंग मानदंडों (सामाजिक संपर्क तकनीक) के प्रभाव का अध्ययन करने तक एक लंबा सफर तय किया है। नए अध्ययनों ने इस बार महिलाओं के सामाजिक संकेतों और परिणामों पर प्रतिक्रिया करने के तरीकों पर फिर से ध्यान केंद्रित किया है। पिछले शोध के अनुसार, महिलाएं प्रतिस्पर्धी बातचीत में खराब प्रदर्शन करती हैं, खासकर जब भुगतान संबंधी बातचीत की बात आती है। हालाँकि, ऐसे शोध की कमी है जो इस परिकल्पना का परीक्षण करता है कि लिंग परिणाम में भिन्नता को कैसे प्रभावित करता है। जब महिलाएं लैंगिक भूमिका की अपेक्षाओं से भटकती हैं तो उन्हें

सामाजिक अस्वीकृति या प्रतिशोध का सामना करना पड़ता है और लिंग और संगठनात्मक जिम्मेदारियों के बीच कथित गलत संरेखण का उपयोग उन तरीकों का पूर्वानुमान लगाने के लिए किया जाता है जिनसे लिंग बातचीत को प्रभावित करता है (रुडमैन, 1998)।

डॉ0 "निशंक" के ग्रंथों का अध्ययन करते हुए, यह शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि महिलाओं को कैसे चित्रित किया जाता है और उत्तराखंड में लैंगिक भूमिकाएँ कैसे बनाई जाती हैं। यह शोध डॉ "निशंक" के लेखन और उत्तराखंड के विशिष्ट सामाजिक–सांस्कृतिक ताने–बाने के बीच संबंधों के जटिल जाल पर प्रकाश डालता है, जो इस बात का विस्तृत परीक्षण प्रदान करता है कि कैसे आख्यान प्रचलित सामाजिक मूल्यों और परंपराओं को प्रतिबिंबित और चुनौती देते हैं। उत्तराखंड के साहित्यिक सिद्धांत के भीतर महिलाओं और लैंगिक भूमिकाओं के चित्रण में निहित सांस्कृतिक जटिलताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए, यह जांच प्रतिनिधित्व की परतों को छीलने का प्रयास करती है, जिससे यह पता चलता है कि डॉ "निशंक" का गद्य परंपरा और आधुनिकता के बीच जटिल नृत्य पर कैसे बातचीत करता है।

डॉ0 "निशंक" ने कहा, ऐसे समय में सबसे बड़ी भूमिका जो कोई निभा सकता है, वह है 'माँ' की। यह सोमवार को अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में आया, जब उन्होंने COVID–19 महामारी के बीच महिला नेताओं के महत्व पर जोर दिया।

शोध उददेश्य –

- उत्तराखंड की लोककथाओं में महिलाओं की पारंपरिक लिंग भूमिका की जांच करना और उस पर सवाल उठाना।
- समग्र संस्कृति के एक पहलू के रूप में महिला संस्कृति की धारणा पर प्रकाश डालने के लिए और एक महिला होने का क्या अर्थ है, इसकी गहन व्याख्या प्रदान करने के लिए।
- उन तरीकों की गहराई से पड़ताल करने के लिए, जिनसे आधुनिक महिलाएं अपनी स्वयं की भावना को फिर से आकार देने, फिर से परिभाषित करने और अंततः समाधान करने का प्रयास करती हैं।

उत्तराखंड की देवी नंदा देवी के बारे में अपने अध्ययन में, रमा कांत बेंजवाल ने भारतीय वेदों के एक प्रसिद्ध श्लोक का उल्लेख किया है, जिसमें कहा गया है, भगवान वहां मौजूद हैं जहां महिलाओं की पूजा की जाती है और उन्हें उच्च सम्मान में लिया जाता है (बेंजवाल, 2013)। ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं को देवी के रूप में सम्मानित किया गया है, जिसने अपने समुदायों की देखभाल और सुरक्षा करने की उनकी क्षमता को सीमित कर दिया है। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उन तरीकों की जांच करना है जिनसे उत्तराखंड में आधुनिक महिलाएं समाज में अपनी जगह पर सवाल उठा रही हैं और उसे फिर से परिभाषित कर रही हैं।

शोध का सैद्धांतिक खंड नारीवादी विचारधारा के स्कूल के काम पर आधारित है, जबकि अनुभवजन्य खंड अध्ययन क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं के साक्षात्कार और प्रत्यक्ष खातों के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा पर निर्भर करता है। लोककथाओं में महिलाओं के चित्रण की पुनर्व्याख्या करके, हम महिला संस्कृति को उजागर करना चाहते हैं।

इलेन शोवाल्टर बीसवीं सदी की एक अमेरिकी साहित्यिक आलोचक और नारीवादी थीं जिनके विचार इस अध्ययन में प्रयुक्त नारीवादी सिद्धांत में शामिल हैं। गाइनोक्रिटिसिज्म, शोवाल्टर द्वारा पेश किया गया एक शब्द, आलोचनात्मक सिद्धांत का एक दृष्टिकोण है जो पुरुष–केंद्रित सिद्धांतों और मॉडलों के अनुकूलन के ऊपर महिला अनुभव पर आधारित नए मॉडल

के निर्माण को प्राथमिकता देता है। नारीवाद के भीतर विचार के दो स्कूल हैं, जिन्हें उन्होंने रेखांकित किया। स्त्री–आलोचना और नारीवादी आलोचना, जो पाठकों की भूमिका में महिलाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

शोवाल्टर की स्त्री–आलोचना जिन चार प्रतिमानों पर आधारित है, वे हैं भाषाई, सांस्कृतिक, मनोविश्लेषणात्मक और जैविक या जैविक। महिलाओं का अध्ययन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ मॉडलों में ऑर्गेनिक मॉडल शामिल है, जो महिलाओं के शरीर को देखता है, भाषाई मॉडल, जो देखता है कि पुरुष और महिलाएं अलग–अलग भाषा का उपयोग कैसे करते हैं, मनोविश्लेषणात्मक मॉडल, जो देखता है कि लिंग रचनात्मकता को कैसे प्रभावित करता है, और सांस्कृतिक मॉडल , जो यह देखता है कि समाज महिलाओं के विचारों को कैसे प्रभावित करता है।

साहित्य की समीक्षा –

(क्लोनर एट अल 2015)यह शोध इस बात पर गौर करता है कि प्रतिस्पर्धात्मकता में लैंगिक असमानताएं महिलाओं की स्थिति को नियंत्रित करने वाले सामाजिक मानकों से कैसे संबंधित हैं। अलग–अलग सामाजिक मानदंडों के साथ तीन पारंपरिक सभ्यताओं में प्रतिस्पर्धा करने के लिए पुरुषों और महिलाओं की प्रवृत्ति की जांच करने के लिए शोधकर्ताओं द्वारा एक प्रयोगशाला–इन–द–फील्ड प्रयोग किया गया थारू एक जो पितृसत्तात्मक था, एक जो लिंग–संतुलित था, और दूसरा जो लगभग था मातृसत्तात्मक निष्कर्षों से पता चला कि पितृसत्तात्मक स्तर बढ़ने के साथ पुरुषों और महिलाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता के बीच असमानता नीरस रूप से बढ़ती है। पितृसत्तात्मक समुदायों में, पुरुषों द्वारा सर्वोत्तम निर्णय लेने की अधिक संभावना होती है, लेकिन जिन समाजों में लिंग समान रूप से वितरित होते हैं, वहाँ महिलाएँ सर्वोत्तम निर्णय लेती हैं। शोध में पाया गया कि लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाले सामाजिक मानदंड पुरुषों की तुलना में महिलाओं की आर्थिक क्षमता को अनलॉक करने के लिए पर्याप्त हैं। लिंग–संतुलित मानदंडों वाली विशिष्ट सभ्यताओं के अलावा, जहां दोनों लिंगों के पास समान रूप से महत्वपूर्ण अधिकार और अधिकार हैं, यह प्रयोग गंभीर सामाजिक मानकों वाले देशों में किया गया था जो स्पष्ट रूप से एक लिंग का समर्थन करते हैं। इस बात के पर्याप्त सबूत हैं कि प्रयोगात्मक नमूने में भाषा और निर्वाह मोड जैसे भ्रमित करने वाले चर नगण्य हैं, क्योंकि अध्ययन रणनीति भारत की सीमा के पश्चिमी हिस्से में पारंपरिक संस्कृतियों के बीच सामाजिक मानदंडों के व्यवस्थित सारणीकरण पर निर्भर करती है। सभी तीन संस्कृतियों में, डेटा ने पितृसत्तात्मक मानदंडों और प्रतिस्पर्धात्मकता में लिंग अंतर के बीच एक मोनोटोनिक सहसंबंध प्रदर्शित किया। महिलाओं के लिए सबसे लाभप्रद समाज वह था जहां कोई लिंग असंतुलन नहीं था, हालांकि पितृसत्ता की डिग्री और इष्टतम विकल्प में लिंग अंतर के बीच एक यू–आकार का लिंक था। शोध के अनुसार, अधिक पितृसत्ता महिलाओं को प्रतिस्पर्धा करने के लिए कम उत्सुक बनाती है, और महिलाएं संतुलित वातावरण में पनपती हैं, जिसका अर्थ है कि कुछ निष्कर्ष लागू हो सकते हैं।

(डिट्रिच एट अल, 2021) किरकुक और दियाला में इराकी महिलाओं को कई परस्पर संबंधित कारणों से सांप्रदायिक निर्णय लेने में कम प्रतिनिधित्व दिया जाता है। लंबे समय से चले आ रहे पुरुष विशेषाधिकार और दोनों प्रांतों में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं को चुनौती के आलोक में, यह शोध सामाजिक परिवर्तन के नए रास्ते तलाशता है। वैसे भी, लैंगिक रूढ़िवादिता और लिंग के बारे में सीमित विचार महिलाओं की पूर्ण सहभागिता को सीमित करते हैंय ऑक्सफैम और उसके साझेदार इस रिपोर्ट के जरिए इन बाधाओं को दूर करना चाहते हैं। पुरुष सहयोगियों के बीच जागरूकता बढ़ाने के प्रयास और प्रथाओं, दृष्टिकोण और व्यवहार में परिवर्तनकारी परिवर्तन को बढ़ावा देने के लिए अन्य दीर्घकालिक पहल परिवर्तन के तरीकों में से हैं।

(सिसलाधी और हेइज, 2020)

लैंगिक समानता के संबंध में विचार और कार्य के दो नए स्कूल हैं। एक सामाजिक मनोविज्ञान पर आधारित है और इसका उद्देश्य सामाजिक मानदंडों को बदलना हैय दूसरा नारीवादी विद्वता पर आधारित है और इसका उद्देश्य लैंगिक असमानता का मुकाबला करना है। इन दोनों संस्कृतियों के बीच समानताओं और विरोधाभासों को समझकर हानिकारक दृष्टिकोण और व्यवहार का मुकाबला करना आवश्यक है। सामाजिक और लैंगिक मानकों की तुलना और अंतर करके, यह लेख असहमति के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर प्रकाश डालता है। यह विचार के इन दो विद्यालयों को जोड़ने वाले शोधकर्ताओं और चिकित्सकों के लिए लिंग मानदंडों की एक कार्यशील परिभाषा प्रदान करता है, यह मानते हुए कि लिंग मानदंड दोनों आंतरिक रूप से व्यक्तियों द्वारा और बाह्य रूप से संस्थानों द्वारा आयोजित मान्यताएं हैं, बाद वाले का स्वास्थ्य संबंधी व्यवहारों पर दूरगामी प्रभाव पड़ता है और स्वास्थ्य देखभाल असमानताओं के वितरण पर पूर्व। यह शोध मौजूदा साहित्य को जोड़ता और मजबूत करता है जो स्वास्थ्य असमानताओं और उनके समाधानों पर व्यक्तिवादी दृष्टिकोण को चुनौती देता है। यह सीखने के महत्व पर जोर देता है कि कैसे लोगों के सामाजिक नेटवर्क पहले से मौजूद सामाजिक पैटर्न को बनाए रखते हैं, जिससे सामूहिक रूप से अवांछनीय परिणाम मिलते हैं।

(i) मानक आदेश की स्थापना और रखरखाव ।

(ii) मानदंडो और व्यक्तिगत दृष्टिकोण के बीच संबंध।

(iii) मानदंडो की सीमा।

जब विकास सहयोग की बात आती है, तो सांस्कृतिक कारक लैंगिक समानता को आगे बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। कुछ कार्यक्रम अधिकारियों और साझेदारों को लैंगिक समानता की वकालत करने में नैतिक या व्यावहारिक आपत्ति हो सकती है क्योंकि उन्हें डर है कि यह स्थानीय संस्कृति से टकराएगा। अन्य सभ्यताओं के विचार और व्यवहार, विशेष रूप से परम्परा या धर्म में दृढ़ता से निहित, बौद्धिक और कलात्मक कार्यों के साथ–साथ संस्कृति का भी हिस्सा हैं। किसी समाज या समूह की पहचान उसके आध्यात्मिक, भौतिक, बौद्धिक और भावनात्मक गुणों का समूह है (मेक्सिको, 1982)।

सांस्कृतिक मानदंड किसी पुरुष या महिला के उचित आचरण को प्रभावित करते हैं, साथ ही पुरुषों और महिलाओं को एक–दूसरे के साथ कैसे बातचीत करनी चाहिए। घरेलू, सामाजिक और व्यावसायिक क्षेत्रों पर उनके व्यापक प्रभाव के कारण, लिंग पहचान और बातचीत मौलिक सांस्कृतिक विशेषताएं हैं। क्योंकि पुरुष या महिला होने के कुछ सांस्कृतिक अर्थ होते हैं, लिंग एक सामाजिक आयोजन तत्व के रूप में कार्य करता है।

सांस्कृतिक कारक बताते हैं कि अधिकांश सभ्यताओं में घर और समाज के अंदर महिलाओं के काम और पुरुषों के काम के अलग–अलग पैटर्न क्यों हैं। लिंग संबंध जटिल और गतिशील हैं, जो पूरे समय और विभिन्न संस्कृतियों में बदलते रहते हैं। अधिकांश सभ्यताओं में, महिलाओं को कई नुकसानों का सामना करना पड़ता है, जिनमें कम वित्तीय स्वतंत्रता, कम राजनीतिक प्रतिनिधित्व और महत्वपूर्ण जीवन निर्णयों पर कम नियंत्रण शामिल है। लैंगिक असमानता की यह प्रवृत्ति विकास और मानवाधिकारों के साथ एक समस्या है (एंडरलिनी, 2000)।

विभिन्न कारणों से लिंग परिभाषाएँ समय के साथ बदलती रहती हैं क्योंकि समाज और संस्कृतियाँ निरंतर विकास और पुनर्आकार से गुजरती हैं। वैश्वीकरण, नई तकनीक, पर्यावरणीय चुनौतियाँ, युद्ध और विकास पहल जैसे कारकों द्वारा लाए गए सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप, समुदायों और परिवारों में सांस्कृतिक परिवर्तन होता है। एक उदाहरण के रूप में, बांग्लादेश में कपड़ा उद्योग व्यापार नीति में बदलाव के कारण विकसित हुआ, जिसने बदले में कई

महिलाओं को महानगरीय क्षेत्रों में काम करने के लिए आकर्षित किया। इस परिवर्तन के हिस्से के रूप में, महिलाओं और उनके परिवारों ने पर्दा, या महिला एकांतवास की पारंपरिक प्रथाओं पर पुनर्विचार किया है। ढाका जैसे स्थानों में महिलाओं की बढ़ती दृश्यता से घर और कार्यस्थल में संभावित महिला भूमिकाओं के बारे में सार्वजनिक विचार भी प्रभावित हो रहे हैं।

जैसे–जैसे समय बीतता है और नई परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं, सांस्कृतिक मानदंडों की निरंतर पुनर्व्याख्या होती हैय कुछ आदर्शों को बरकरार रखा जाता है जबकि अन्य को अनुपयुक्त मानकर उन पर सवाल उठाए जाते हैं। क्योंकि वे लोगों के दिन–प्रतिदिन के अनुभवों को प्रभावित करते हैं, लिंग पहचान और संबंध सांस्कृतिक समझ के लिए मौलिक हैं। तथ्य यह है कि लिंग संबंधों में परिवर्तन हर किसी को प्रभावित करते हैं, चाहे उनकी लिंग पहचान या अभिव्यक्ति कुछ भी हो, उन्हें एक गर्म बहस का विषय बनाता है। हमारी संस्कृति में चीजें कितनी तेजी से बदलती हैं, इसके कारण लैंगिक भूमिकाएं–और विशेष रूप से गृहिणी और मां के रूप में महिलाओं की पारंपरिक जिम्मेदारियां–प्रगति और ठहराव दोनों के शक्तिशाली प्रतीक के रूप में काम कर सकती हैं (ब्रिजर, 1996)।

महिलाओं की भूमिकाओं के इर्द–गिर्द उभरे राजनीतिक और धार्मिक समूहों ने सांस्कृतिक या धार्मिक निष्ठा और पश्चिमी प्रभावों के प्रति घृणा पर जोर दिया है। इन सेटिंग्स में परिवर्तन के लिए आंतरिक आंदोलन पहले से ही कठिन हैं, और जो लोग परिवर्तन की मांग कर रहे हैं उन्हें विश्वासघाती, अधार्मिक या पश्चिम द्वारा भ्रष्ट के रूप में लेबल करना बहुत आसान है। विभिन्न महिला संगठनों ने धार्मिक ग्रंथों की पारंपरिक समझ का पुनर्मूल्यांकन करने और महिलाओं की स्वतंत्रता और सम्मान को बढ़ावा देने वाले सिद्धांतों और परंपराओं को अपनाने के लिए काम किया है, जिससे पता चलता है, कि धार्मिक मान्यताएं और राष्ट्रीय पहचान महिलाओं के लिए उतनी ही महत्वपूर्ण हैं।

स्थिर होने के बजाय, सांस्कृतिक मूल्य गतिशील हैं और कई हितों के परिणामस्वरूप परिवर्तन के अधीन हैं। लैंगिक समानता और महिलाओं की भूमिकाओं पर राय एक व्यक्ति या समूह से दूसरे व्यक्ति में अलग–अलग होगी, और इन विषयों पर दृष्टिकोण भी महिलाओं और पुरुषों में अलग–अलग होंगे। लैंगिक समानता परियोजनाओं का निष्पक्ष मूल्यांकन करने के लिए, विभिन्न लोगों से बात करना आवश्यक है, जिनमें वे लोग भी शामिल हैं जो समानता के लिए सक्रिय रूप से लड़ रहे हैं।

विकास परियोजनाओं में निवेश का उद्देश्य सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को बढ़ावा देना है। सामाजिक रूप से प्रभावशाली मान्यताओं और व्यवहारों, जैसे परिवार नियोजन और बाजार अर्थव्यवस्थाओं में बदलाव को बदलने के प्रयास किए जा रहे हैं। यहां तक कि ऐसी परियोजनाएं जिनका संस्कृति से कोई लेना–देना नहीं है, जैसे शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों को जोड़ने के लिए बेहतर सड़क प्रणाली का निर्माण, संस्कृति को परिभाषित करने वाले सामाजिक संपर्क को बदल देती हैं।

1983 में डॉ0 रमेश पोखरियाल "निशंक" की समर्पण का प्रकाशन उनकी कविताओं और लघु कथाओं की पहली पुस्तक थी, लेकिन उन्होंने कम उम्र में लिखना शुरू कर दिया था। बारह कहानी संग्रहों, दस उपन्यासों, दो यात्रा गाइडों, बच्चों के लिए छह पुस्तकों और आत्म–सुधार पर दो पुस्तकों के अलावा, उनका साहित्यिक उत्पादन चालीस से अधिक कार्यों तक फैला हुआ है। राष्ट्रीय गौरव की प्रबल भावना के साथ, उनके लेखन ने उन्हें हिंदी साहित्य में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के रूप में स्थापित किया है। जर्मन, अंग्रेजी, फ्रेंच, तेलुगु, मलयालम और मराठी कुछ ऐसी भाषाएँ हैं जिनमें उनकी कृतियों का अनुवाद किया गया है। अन्य संस्थान जिन्होंने उनके लेखन को अपने पाठ्यक्रम में शामिल किया है उनमें हैम्बर्ग,

मद्रास और चेन्नई शामिल हैं। डॉ. सुधाकर तिवारी, नागेंद्र, विनय डबराल, श्यामधर तिवारी और सविता मोहन उन कई शिक्षाविदों में से हैं जिन्होंने उनके कार्यों का अध्ययन किया है और उन पर रिपोर्ट तैयार की है। दुनिया भर में कई संस्थान अब डॉ. शनिशंकश के कार्यों पर शोध कर रहे हैं, जिनमें भारत और उसके बाहर के संस्थान भी शामिल हैं। इनमें शामिल हैं गढ़वाल विश्वविद्यालय, कुमाऊं विश्वविद्यालय, मध्य प्रदेश में सागर विश्वविद्यालय, रोहिलखंड विश्वविद्यालय, मद्रास विश्वविद्यालय, लक्कीनो विश्वविद्यालय, मेरठ विश्वविद्यालय और जर्मनी में हैम्बर्ग विश्वविद्यालय।

समाजिक आदर्श –

सामाजिक मानदंडों का अध्ययन और वे व्यक्तिगत व्यवहार को कैसे आकार देते हैं, इसे सामाजिक मानदंड सिद्धांत के रूप में जाना जाता है। समाजशास्त्री और मानवविज्ञानी 20वीं सदी से सामाजिक मानदंडों और व्यवहार पर उनके प्रभाव का अध्ययन कर रहे हैं, और वे इस शब्द के कई अर्थ और व्याख्याएं लेकर आए हैं। शब्द ष्सामाजिक मानदंडष उन सामान्य सिद्धांतों के समूह को संदर्भित करता है जो यह निर्धारित करते हैं कि किसी निश्चित समूह के सदस्यों से किस हद तक एक निश्चित तरीके से काम करने की उम्मीद की जाती है। ड्रेस कोड, बैठक के घंटे और भाषा ऐसे कुछ क्षेत्र हैं जहां उनका प्रभाव पड़ सकता है (दुर्कहेम, 1951)।

लिंग और महिला अधिकारों के क्षेत्र में सामाजिक मानदंडों के सिद्धांत की मुख्यधारा के प्रतिमान से तुलना करते समय, ध्यान में रखने के लिए तीन प्रमुख तत्व हैं। आरंभ करने के लिए, हम सामाजिक मानकों को व्यक्तिगत दृष्टिकोण से अलग मान सकते हैं, जो किसी व्यक्ति के अपने व्यक्तिपरक अनुभवों के आधार पर किसी मुद्दे का आकलन है। सामाजिक मानदंडों के साथ विपरीत सच है, जो बहुमत के कार्यों और दृष्टिकोण पर दृढ़ विश्वास रखते हैं। परंपरागत रूप से, सामाजिक मानदंडों पर आधारित हस्तक्षेपों ने वर्णनात्मक और निषेधात्मक मानदंडों के बीच विसंगति का फायदा उठाया है, जो दूसरों के कार्यों और दृष्टिकोण पर लोगों के विचारों और लोगों के वास्तविक व्यवहार और दृष्टिकोण (बिंगनहाइमर 2019) को संदर्भित करता है।

दूसरे, सामाजिक मानदंड सिद्धांत के क्षेत्र में विचार के कई स्कूलों का तर्क है कि नियम संदर्भ समूह या उस समूह के सभी सदस्यों द्वारा साझा की गई साझा विशेषताओं के सेट के भीतर सबसे सार्वभौमिक रूप से लागू होते हैं। उदाहरण के तौर पर, एक युवा व्यक्ति अपने परिवार के आसपास अपवित्रता का उपयोग करने में असहज हो सकता है, लेकिन जब वह अपने दोस्तों के साथ अकेला होता है तो उसे ऐसा करने में कोई समस्या नहीं होती है। वह अपने कार्य करने के तरीके को बदल देता है ताकि वह कुछ सामाजिक मानदंडों के साथ फिट हो सके (व्हाइट एट अल. 2009)।

तीसरा, मानदंड स्वतंत्र और अन्योन्याश्रित दोनों कृत्यों का मार्गदर्शन कर सकते हैं फिर भी, कुछ शिक्षाविदों का तर्क है कि मानक केवल पहले वाले को ही नियंत्रित करते हैं। एक अन्योन्याश्रित गतिविधि में एक लक्ष्य को पूरा करने के लिए, लोगों को अपने प्रयासों का समन्वय करना चाहिए, जबकि एक स्वतंत्र कार्रवाई में, उन्हें किसी और की सहायता की आवश्यकता नहीं होती है। मानदंड सिद्धांत–आधारित विकास उपचारों ने अधिकतर दूसरे प्रकार के व्यवहार को लक्षित किया है। उदाहरण के लिए, पश्चिम अफ्रीका में महिला जननांग काटने पर शोध के अनुसार, यह सुनिश्चित करने के लिए एक विधि के रूप में किया गया था कि बेटी की शादी हो सके (वान लैंग और बैलेट 2015)।

अन्योन्याश्रित गतिविधियाँ सभी आदर्श सिद्धांतों का एकमात्र फोकस नहीं हैं। ऐसे सिद्धांत जो समाजीकरण और मानदंडों के आंतरिककरण पर केंद्रित हैं, उनमें से एक यह जांच करना है कि मानदंड स्वायत्त व्यवहार को कैसे प्रभावित करते हैं। जेनिटिडौ और एडमंड्स (2014) कहते हैं कि ये विशेषताएँ इस बात पर प्रकाश डालती हैं कि सामाजिक मानदंड लोगों के कार्यों और विकल्पों को कैसे प्रभावित करते हैं।

लिंग मापदंड–

पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं, दृष्टिकोण और प्राथमिकताओं के लिए जन्मजात के बजाय सामाजिक रूप से निर्मित लिंग मानदंड पहली बार 1970 के दशक में सामने आए। नारीवादी समाजशास्त्रियों ने इस सिद्धांत का विस्तार करते हुए प्रस्ताव दिया कि लिंग को एक सामाजिक संरचना के रूप में बेहतर ढंग से समझा जाता है जो किसी चीज को मर्दाना या स्त्री के रूप में कैसे देखा जाता है, इसके आधार पर जिम्मेदारियां, विशेषाधिकार और अधिकार प्रदान करता है। वर्तमान लिंग प्रणालियों में से अधिकांश अत्यधिक स्तरीकृत हैं, जो स्त्री गुणों की तुलना में मर्दाना गुणों को अधिक महत्व देती हैं (हेइज एट अल. 2019, वेबर एट अल. 2019)।

लिंग मानदंड लिंग प्रणाली का केवल एक हिस्सा है, जिसमें लिंग भूमिकाएं, समाजीकरण और लिंग के आधार पर शक्ति की गतिशीलता भी शामिल है। बीसवीं सदी के आखिरी दशक में, जब कई अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने लैंगिक असमानता रहित दुनिया की दिशा में काम करने का संकल्प लिया, तो यह शब्द स्वास्थ्य और विकास की भाषा में प्रवेश कर गया। पहले खातों में से अधिकांश पारंपरिक लिंग भूमिकाओं के बजाय शलिंग आधारित शक्ति असमानताओंश पर केंद्रित थे। दूसरी ओर, लिंग मानदंड शब्दावली ने वर्ष 2000 तक अकादमिक चर्चा पर हावी होना शुरू कर दिया था, 2000 से 2010 (इवांस एट अल 2011) के दशक में 16,700 उल्लेखों के साथ, 1985–1990 के वर्षों में 300 से अधिक।

लिंग पर काम करने वाले विद्वानों और कार्यकर्ताओं ने लंबे समय से लिंग मानदंडों पर ध्यान केंद्रित किया है, लेकिन 2010 के दशक में ट्रांसजेंडर सक्रियता और समलैंगिक अध्ययनों की वृद्धि के कारण लिंग सिद्धांत में विविधता देखी गई। एक सामाजिक संरचना के रूप में लिंग और लिंग मानदंडों पर और एक व्यक्ति की एक पुरुष, एक महिला या दोनों के मिश्रण के रूप में दृढ़ता से मनोवैज्ञानिक पहचान के रूप में लिंग पर अलग–अलग विचार थे। इसके अतिरिक्त, इस शब्द का लोकप्रिय उपयोग तब बदल गया जब व्यक्तियों ने सेक्स के बजाय लिंग का उपयोग करना शुरू कर दिया, जिसके कारण लिंग के जैविक और सामाजिक रूप से निर्मित पहलुओं के बीच की रेखा धुंधली हो गई (हेइज एट अल।, 2019)।

यह पेपर जन्म के समय मौजूद लिंग मानदंडों के चार मुख्य पहलुओं पर केंद्रित है बचपन में सीखना, असमान शक्ति संबंधों को मजबूत करना, सामाजिक संपर्क के माध्यम से लिंग मानदंडों का उत्पादन और पुनरुत्पादन, और संस्थानों में लिंग मानदंडों को एम्बेड करना। महिलाओं और लड़कियों के स्वास्थ्य और कल्याण पर प्रभाव डालने वाली लैंगिक प्रथाओं (जैसे कम उम्र में विवाह) को संबोधित करने के उद्देश्य से किए गए कार्य में वर्तमान में मानदंडों की दो प्रतिस्पर्धी अवधारणाएं शामिल हैं। एक सामाजिक मनोविज्ञान से और दूसरा नारीवाद और समाजशास्त्रीय सिद्धांत से (कोनेल, 2014)।

आधुनिक युग में, उत्तराखंड में महिलाओं ने पुनर्विचार, पुनर्कल्पना और अंततः अपनी विशिष्ट पहचान बनाने के लिए पारंपरिक स्थितियों पर सवाल उठाने की कोशिश कैसे की है? यह परियोजना जिस शोध प्रश्न का पता लगाने का इरादा रखती है, उसका उत्तर देने के लिए प्राथमिक और माध्यमिक दोनों स्रोतों की व्यापक साहित्य समीक्षा की गई। अध्ययन का गुणात्मक पहलू ही इसे अलग करता है। उपयोग किए गए दृष्टिकोण में सैद्धांतिक और व्यावहारिक दोनों विचार शामिल हैं। इस अध्ययन के दो भाग होंगेरू एक सैद्धांतिक होगा, जो नारीवादी विचारधारा के विचारों पर आधारित होगाय

और दूसरा अनुभवजन्य होगा, साक्षात्कार और व्यक्तिगत खातों के माध्यम से निर्दिष्ट क्षेत्र में महिलाओं से डेटा एकत्र करना।

इसलिए, यह शोध पत्र महिला संस्कृति को उजागर करने के लिए निर्दिष्ट साहित्यिक कार्यों में महिलाओं के चित्रण का पुनर्मूल्यांकन और पुनर्विचार करेगा। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए लक्षित क्षेत्र की महिलाओं के व्यक्तिगत अनुभवों और भाईचारे के मजबूत संबंधों का अध्ययन किया जाएगा। ये महिलाएं जो कहानियां सुनाती हैं, वे पूरे शहर के लिए जानकारी के खजाने की तरह हैं, और भाईचारे के संबंध स्थिरता की चट्टान की तरह हैं। शोध के अनुसार, स्त्री संस्कृति में पुरुष और महिला दोनों क्षेत्रों के तत्व शामिल होते हैं। इसलिए, महिलाओं की संस्कृति एक विशिष्ट उपसंस्कृति नहीं है, बल्कि मुख्यधारा की संस्कृति का एक अनिवार्य हिस्सा है। इसे दूसरे तरीके से कहें तो, महिलाएं श्पालनकर्ताश और उद्धारक की दोहरी भूमिकाएं निभाने में पूरी तरह से सक्षम हैं, ये दो भूमिकाएं ऐतिहासिक रूप से पुरुषों के साथ जुड़ी हुई हैं।

एक लोककथा में महिलाओं के चित्रण के आलोचनात्मक विश्लेषण के माध्यम से, यह शोध अध्ययन महिलाओं की संस्कृति में गहराई से उतरने का प्रयास करता है। तकनीक में सैद्धांतिक और अनुभवजन्य तरीकों के संयोजन का उपयोग किया जाता है, जिसमें पूर्व में नारीवादी विचारकों के काम पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। अध्ययन क्षेत्र में रहने वाली महिलाओं का साक्षात्कार लिया जाएगा और डेटा संकलित करने के लिए उनके प्रत्यक्ष खातों का उपयोग किया जाएगा। सिस्टरहुड ताकत का एक स्रोत है, और अध्ययन का लक्ष्य समुदाय की सभी महिलाओं को शिक्षित और सूचित करना है। अध्ययन के लेखकों का तर्क है कि महिलाओं की संस्कृति एक विशिष्ट उपसंस्कृति की तुलना में मुख्यधारा के समाज से अधिक संबंधित है क्योंकि इसमें दोनों लिंगों के तत्व शामिल हैं। पालनकर्ता और उद्धारक दो ऐतिहासिक रूप से पुरुष–प्रधान पद हैं जिन्हें महिलाएं सफलतापूर्वक अपना सकती हैं।

केस स्टडी 1

ऊंचे इलाकों में रहना एक चुनौतीपूर्ण और अप्रिय गतिविधि है, खासकर महिलाओं के लिए। पौडी गढ़वाल के उनियाल मोक्सन की 80 वर्षीय सकुम्बरी देवी अपने परिवार की रोजमर्रा की गतिविधियों के बारे में बताती हैं, जिसमें घर की सफाई, घरेलू जानवरों (जैसे बकरी, भेड़, गाय और भैंस) की देखभाल करना और लंबी ट्रैकिंग शामिल है। चारे के लिए घास इकट्ठा करने के लिए दूरियाँ। अपने चूल्हा (मिट्टी का चूल्हा) के लिए, वे जंगल से आग की लकड़ियाँ भी इकट्ठा करते हैं, और वे अपनी दैनिक आवश्यकताओं के लिए पानी भी इकट्ठा करते हैं। इन यात्राओं पर विभिन्न गांवों की महिलाएं एकत्रित होती हैं, जिससे उन्हें आराम करने और मेलजोल बढ़ाने का मौका मिलता है। जंगल महिलाओं के लिए एक परिवार के सदस्य की तरह है क्योंकि यह उनकी बुनियादी जरूरतों को पूरा करता है, उनके पहाड़ी समुदायों को नुकसान से बचाता है, और उन्हें उनके भारी श्रम से छुट्टी देता है। महिलाएं, जिन पर अक्सर अधिक काम का दबाव होता है, उन्हें जंगलों में आश्रय और समुदाय की जगह मिल जाती है (नेगी सीएस, 2013)।

उत्तराखंड की पहाड़ियों की महिलाओं के अनुभवों को डॉ0 रमेश पोखरियाल "निशंक" की भाषा में खोजा गया है, जो व्यक्ति और समुदाय के रूप में उनकी शक्ति पर जोर देती है। 80 वर्षीय साकुम्बरी देवी जैसी कहानियाँ दिखाती हैं कि उनका रोजमर्रा का जीवन कितना सामुदायिक था, घरेलू जानवरों की देखभाल, संसाधन एकत्र करना और घर के रख–रखाव जैसे कार्य विशेष रूप से कठिन थे। इसके अलावा, भाषा पहाड़ के लोगों और जंगल के बीच पारस्परिक रूप से लाभप्रद संबंध पर जोर देती है, जो इन पहाड़ी निवासियों के लिए एक सुरक्षात्मक बाधा प्रदान करती है। इन यात्राओं

के दौरान अधिक काम करने वाली महिलाओं को अपने रोजमर्रा के कामों से छुट्टी मिलती है, जब सामुदायिक समारोहों से मेलजोल और आराम मिलता है। डॉ0 रमेश पोखरियाल "निशंक" का लेखन उत्तराखंड के सांस्कृतिक लोकाचार में एक खिड़की प्रदान करता है, जिससे पाठकों को लिंग भूमिकाओं, सामाजिक सम्मेलनों और प्रतिनिधित्व की जांच करने की अनुमति मिलती है। इस साहित्यिक सेटिंग में लिंग की जटिल गतिशीलता के बारे में हमारी समझ साकुंबरी देवी द्वारा वर्णित रोजमर्रा की जिंदगी के जटिल विवरणों से बढ़ी है। ये विवरण कठिन ऊंचे इलाकों में रहने वाली महिलाओं की दृढ़ता और दृढ़ता और साथ मिलकर काम करने की उनकी क्षमता को प्रमाणित करते हैं।

एक महिला हो की अवधारणा – एक पुनर्विचार

एलिस ने अपनी पुस्तक द वुमेन ऑफ इंग्लैंड देयर सोशल ड्यूटीज, एंड डोमेस्टिक हैबिट्स में बहनों के बीच संबंधों के बारे में लिखा है। वह उन्हें मेरी बहनें कहती हैं और जैविक बहनों के स्थान पर बहनें शब्द का प्रयोग करती हैं (मर्मिन, 1983)। महिलाओं को आपस में भाईचारा बनाने के लिए उनका दर्द जरूरी है। सिस्टरहुड इस विचार पर आधारित है कि जब महिलाएं एक–दूसरे की विशिष्टता का जश्न मनाने और पुष्टि करने के लिए एकजुट होती हैं तो वे अधिक मजबूत होती हैं। महिलाओं की शक्ति को समझना और स्वीकार करना महत्वपूर्ण है, और महिलाओं की बहन का मूल उनकी अपनी पहचान को अपनाने और समझाने में है, जो दर्शाता है कि समाज में महिलाओं की भूमिका पितृसत्तात्मक द्विआधारी सोच से परे है।

उदाहरण–1

डॉ0 रमेश पोखरियाल "निशंक" की साहित्यिक कृति, तीलू रौतेली, उत्तराखंड के सांस्कृतिक लोकाचार की एक दिलचस्प जांच है, जो एक प्रसिद्ध गढ़वाली योद्धा और लोक नायिका के जीवन और कार्यों पर केंद्रित है। 1661 में जन्मी तीलू कठिनाई के सामने लचीलेपन और धैर्य का प्रतीक बन गई। कहानी उत्तराखंड की सामाजिक–राजनीतिक पृष्ठभूमि से शुरू होती है, जो उन कठिन दिनों पर केंद्रित है जब इस क्षेत्र पर चंद राजवंश का शासन था और कत्यूरी सेनाओं से विदेशी खतरों का सामना करना पड़ता था।

तीलू ने नेतृत्व की स्थिति ग्रहण करके लैंगिक रूढ़िवादिता को तोड़ा, जो आमतौर पर पुरुषों के लिए होती है। गुरु शिबू पोखरियाल के अधीन घुड़सवारी और तलवारबाजी में उनकी दक्षता उस अवधि के दौरान महिलाओं के लिए सामाजिक अपेक्षाओं की अवज्ञा का संकेत देती है। तीलू की माँ की टिप्पणी, जो अपने पिता की हत्या का बदला लेने के बजाय एक ग्रामीण मेले में भाग लेने के उनके फैसले पर सवाल उठा रही थी, उनके बदलाव के लिए आवश्यक है, जो महिलाओं पर स्वीकृत भूमिकाओं का पालन करने के लिए सामाजिक दबाव को दर्शाती है। तीलू का एक दुखियारी बेटी से एक सशक्त नेता में परिवर्तन डॉ0 रमेश पोखरियाल "निशंक" के लेखन के लिए आवश्यक है। वह एक सेना बनाती है, अपने मामा और परामर्शदाता से सलाह लेती है और महिलाओं को कमजोर और आश्रित मानने की रूढ़िवादिता को खारिज करते हुए गुरिल्ला युद्ध तकनीक का इस्तेमाल करती है। मराठा जनरल, श्री गुरु गौरीनाथ की उपस्थिति, योग्यता और कौशल के आधार पर लिंग–तटस्थ नेतृत्व की अवधारणा पर प्रकाश डालती है।

तीलू का साहसिक कार्य तब विकसित होता है जब वह किलों पर विजय प्राप्त करती है और अपने पिता, भाई–बहनों और मंगेतर की मौत का बदला लेने के लिए लड़ती है। डॉ0 रमेश पोखरियाल "निशंक" का साहित्यिक कार्य उत्तराखंड के सामाजिक–राजनीतिक संदर्भ में महिलाओं की स्थिति की जांच करता है, जिसमें लिंग भूमिकाओं और सामाजिक सम्मेलनों

के बीच जटिल अंतरसंबंध के साथ–साथ क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत के भीतर इन मानदंडों की बातचीत पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

उदाहरण–2

उत्तराखंड के रेनी गांव की महिलाओं ने 26 मार्च 1974 को 49 वर्षीय गौरा देवी के नेतृत्व में अपने अधिकारों और वन क्षेत्रों के लिए मार्च निकाला। जब गौरा केवल 22 वर्ष की थी, तभी उसके पति की मृत्यु हो गई और वह अपने ससुराल चली गईय उनका जन्म 1925 में चमोली क्षेत्र में एक आदिवासी मरचया परिवार में हुआ था। अपने परिवार का भरण–पोषण करने के लिए, वह पारिवारिक ऊन व्यापार में लगी रहीं।

गाँव की अन्य महिलाओं ने गौरा की कहानी से सीख ली, जिसने उन्हें सामुदायिक परियोजनाओं में भाग लेने और अपने वन क्षेत्रों के संरक्षण के लिए खड़े होने के लिए प्रेरित किया। इसके अलावा, उन्होंने महिला मंगल दल की प्रमुख के रूप में गांव के स्वच्छता कार्यक्रम की देखरेख की। 1973 के आसपास पर्यावरणविद् चंडी प्रसाद भट्ट ने चिपको आंदोलन शुरू किया।

1974 तक गौरा ने जो एकमात्र काम किया वह स्थानीय लोगों में चेतना जगाना था। जब सरकार ने ठेकेदारों को गाँव में 2,500 पेड़ काटने की अनुमति दी तो रेनी गाँव के निवासियों ने विरोध प्रदर्शन किया। यही वह दिन था जब गौरा देवी ने पहाड़ी पर चढ़ कर ठेकेदारों से लड़ने के लिए सत्ताईस महिलाओं को एकजुट किया था। जैसे ही उन्होंने पेड़ों को गले लगाया, महिलाओं ने उनसे पहले उन पर प्रहार करने का आग्रह किया। महिलाएँ दृढ़ रहीं और ठेकेदारों की हिंसक धमकियों के बावजूद हिलने से इनकार कर दिया।

महिलाओं की हठधर्मिता एक वरदान थी, और ठेकेदार बिना किसी चीज के चले गए। इस प्रकरण के परिणामस्वरूप हिमालय के अन्य हिस्सों में वर्ष 1975, 1978 और 1980 में महिलाएं अपने वन क्षेत्रों के लिए लड़ने के लिए प्रेरित हुईं।

उदाहरण–3

रेनी गांव के डुंगरी–पैतोली कार्यक्रमों और चिपको आंदोलन ने प्रदर्शित किया कि कैसे महिलाएं आगे बढ़ सकती हैं और महान कार्य कर सकती हैं जबकि पुरुष अनुपस्थित थे। जैसा कि उनका पारंपरिक कर्तव्य था, डूंगरी–पैतोली की महिलाएं अपने पुरुष रिश्तेदारों के खिलाफ विद्रोह में उठ खड़ी हुईं। पहाड़ियों में वनीकरण के लिए लड़कर और वन प्रबंधन समिति में भागीदारी की मांग करके, वे अपने वन क्षेत्र को लकड़हारे और समुदाय के प्रमुख समूह से बचाने में सक्षम थे।

दो केस अध्ययनों से पता चलता है कि कैसे महिला–प्रधान समूह ने बाधाओं को पार किया और विपरीत परिस्थितियों में एक–दूसरे का समर्थन किया। बड़ी लॉगिंग फर्मों के खिलाफ इन महिलाओं की जीत एक ऐतिहासिक क्षण थीय इससे उन्हें अंतर्राष्ट्रीय ख्याति मिली और यह प्रदर्शित हुआ कि बहू होना उनके समाज के लिए एक संपत्ति है, दायित्व नहीं।

सरकार और लॉगिंग फर्मों के कृत्यों के कारण, गढ़वाल की महिलाओं ने सीखा कि जागरूक रहने से आक्रामक कदम उठाने पड़ते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों को भूस्खलन और अन्य आपदाओं से बचाने और पूरी आबादी के लिए आवश्यक उपयोगिताएँ प्रदान करने के लिए गढ़वाल के वन क्षेत्र लंबे समय से मुक्ति का स्रोत रहे हैं। स्थानीय महिलाएं यह जानती थीं, और वे भाईचारे की अपनी मजबूत भावना के कारण बहादुरी और विजयी ढंग से लड़ीं (चोपड़ा, 2019)।

मानवशास्त्रीय अनुसंधान और कट्टरपंथी नारीवादी विचारों के अनुसार, महिलाएं प्राकृतिक दुनिया से संबंधित हैं, जबकि पुरुष सांस्कृतिक क्षेत्र से संबंधित हैं। इस रिश्ते के परिणामस्वरूप, महिलाओं से घर पर रहने और बच्चों की देखभाल के साथ–साथ खाना पकाने और सफाई की अपेक्षा की जाती थी, जबकि पुरुषों से युद्ध और शिकार जैसी अधिक शारीरिक रूप से मांग वाली गतिविधियों में संलग्न होने की अपेक्षा की जाती थी। इस द्वंद्ववाद की अवहेलना में, शोलेटर ने इस बारे में बात की कि महिलाओं की संस्कृति अभिभावक कैसे है, यह तर्क देते हुए कि इसे अधिक सटीक रूप से एक ऐसी संस्कृति के रूप में वर्णित किया गया है जो पुरुषों और महिलाओं द्वारा साझा की गई विशेषताओं को शामिल करती है। गढ़वाल की महिलाओं ने वन क्षेत्रों को संरक्षित करके प्रकृति से अपने संबंध और मानव संस्कृति के अभिन्न तत्व के रूप में महिला संस्कृति की अवधारणा को संरक्षित किया।

इसलिए, महिलाओं को एक एंड्रोजेनस मानव के रूप में सोचना संभव है, जिसमें दोनों लिंगों द्वारा साझा की गई विशेषताएं हैं। उपरोक्त महिलाओं की कहानियाँ श्सख्तश लिंग मानदंडों को चुनौती देती हैं जो पुरुषों को गतिशील, जीवंत, सक्रिय और आज्ञाकारी के रूप में चित्रित करती हैं और महिलाओं को निष्क्रिय, विनम्र, आज्ञाकारी और आज्ञाकारी के रूप में चित्रित करती हैं। ये सभी बातें इस विचार की ओर इशारा करती हैं कि महिलाओं में दोनों लिंगों के समान गुण होते हैं। पुरुष–प्रधान पितृसत्तात्मक व्यवस्था को ध्वस्त करना उतना ही सरल है जितना कि महिलाओं को अपना स्थान पुनः प्राप्त करना और अपने सांस्कृतिक अनुभवों को अपनाना। केवल एक महिला होने के नाते एक महिला को आक्रामक और निष्क्रिय दोनों भूमिकाएँ निभाने की अनुमति मिलती है जो अक्सर पुरुषों और महिलाओं से जुड़ी होती हैं।

निष्कर्ष – डॉ0 "निशंक" का लेखन रेनी की एक ग्रामीण महिला गौरा देवी की कहानी के माध्यम से उत्तराखंड में महिलाओं, लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक मानकों के चित्रण पर प्रकाश डालता है, जिन्होंने 1974 में वन संरक्षण के खिलाफ विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया था। चिपको आंदोलन में विपरीत परिस्थितियों से नेतृत्व तक देवी की यात्रा हर जगह की महिलाओं के लिए एक प्रेरणा है, जो दिखाती है कि वे कैसे बाधाओं को पार कर सकती हैं और लिंग मानदंडों के बावजूद कार्रवाई कर सकती हैं। उन्होंने स्थानीय गतिशीलता को बदल दिया और पर्यावरणीय चुनौतियों के सामने अपनी अडिग दृढ़ता से पूरे हिमालय में इसी तरह की पहल को प्रेरित किया। एक उदाहरण के रूप में कि कैसे जमीनी स्तर की गतिविधि सामाजिक मानदंडों को नया आकार दे सकती है, यह ऐतिहासिक घटना पारंपरिक लिंग भूमिकाओं की चुनौती और महिलाओं के प्रतिनिधित्व की बातचीत को दर्शाती है। पर्यावरण और लैंगिक सक्रियता एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, और डॉ0 "निशंक" का शोध महिलाओं की एजेंसी और पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं का सामना करने की उनकी क्षमता पर चल रही बातचीत को और बढ़ाता है। गौरा देवी की कहानी और उसके जैसी अन्य कहानियाँ दिखाती हैं कि कैसे सामूहिक कार्रवाई और महिलाओं की कहानियाँ दुनिया को बदल सकती हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

- ऐटकेन, बी. (2000). नंदा देवी मामला. दिल्ली, पेंगुइन इंडिया.
- ब्यूवोइर, एस. डी. (2011). दूसरा सेक्स. लंदन, विंटेज.
- बेंजवाल, आर. (एड.). (2013)। नानादा देवी उत्तराखंड की देवी। देहरादून, विंसर पब्लिशिंग कंपनी.
- बिंगनहाइमर, जेबी (2019) एक संकीर्ण रास्ते से वीरिंगरू सामाजिक मानदंडों के अनुसंधान का दूसरा दशक, जर्नल ऑफ एडोलसेंट हेल्थ, 64, एस1–3।

- बिष्ट, बी. (2013)। नंदा के जागर. देहरादून, विंसर पब्लिशिंग कंपनी.
- बिष्ट, बी. (2017, 5 मार्च)। तेजस्विनी. (एन. शर्मा, साक्षात्कारकर्ता)
- चोपड़ा, जे. (2019, 25 मार्च)। चिपको के पैंतालीस साल जिसने उत्तराखंड क्षेत्र को वैश्विक फोकस में ला दिया। अग्रणी. देहरादून।
- कॉनेल, आर. और पीयर्स, आर. (2014) लिंग मानदंड और रूढ़िवादिता। परिवर्तन के बारे में अवधारणाओं, अनुसंधान और मुद्दों का एक सर्वेक्षण।
- दुर्खीम, ई. (1951) आत्महत्यारू समाजशास्त्र में एक अध्ययन। ग्लेनको, फ्री प्रेस।
- ईगली, एएच, और करौ, एसजे (2002)। महिला नेताओं के प्रति पूर्वाग्रह का भूमिका अनुरूपता सिद्धांत। मनोवैज्ञानिक समीक्षा, 109, 573–598।
- इवांस, जे., फ्रैंक, बी., ओलिफ, जेएल और ग्रेगरी, डी. (2011) स्वास्थ्य, बीमारी, पुरुष और पुरुषत्व (एचआईएमएम)रू पुरुषों और उनके स्वास्थ्य को समझने के लिए एक सैद्धांतिक ढांचा, जर्नल ऑफ मेन्स हेल्थ,8,7 –15.
- हेइज, एल., ग्रीन, एमई, ओपर, एन., स्टावरोपोलू, एम., एट अल। (2019) लैंगिक असमानता और प्रतिबंधात्मक लैंगिक मानदंड, स्वास्थ्य के लिए चुनौतियों का निर्धारण, द लांसेट, 393, 2440–54।
- मैककोबी, ईई, और जैकलिन, सीएन (1974)। लिंग भेद का मनोविज्ञान. स्टैनफोर्ड, सीएरू स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
- मैकी, जी., मोनेटी, एफ., शाक्य, एच. और डेनी, ई. (2015) सामाजिक मानदंड क्या हैं? उन्हें कैसे मापा जाता है? न्यूयॉकर्रू यूनिसेफ और यूसीएसडी।
- नेगी, सीएस (2013)। नंदा देवी राज जाट की वेशभूषा में. देहरादून, विंसर पब्लिशिंग कंपनी।
- सुनाम नाराघी एंडरलिनी में उद्धृत, पीस टेबल पर महिलाएंरू एक अंतर बनाना। यूनिफेम, 2000.
- रुडमैन, एलए (1998)। महिलाओं के लिए जोखिम कारक के रूप में आत्म–प्रचार, प्रति–रूढ़िवादी प्रभाव प्रबंधन की लागत और लाभ। जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी, 74, 629 – 645।
- उदाहरण के लिए, ब्रिजर, एस. एट. अल., नो मोर हीरोइनें ? रूस, महिलाएँ और बाजार। लंदनरू रूटलेज, 1996।
- वैन लैंग, पीएएम और बैलेट, डी. (2015) परस्पर निर्भरता सिद्धांत। मिकुलिंसर में, एम. और शेवर, पीआर (संस्करण) एपीए हैंडबुक ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी। वाशिंगटनरू एपीए.
- वेबर, ए., सिसलाघी, बी., मेउसून, वीसी, लॉफ्टस, पी., एट अल। (2019) पुरुषों और महिलाओं के स्वास्थ्य पर लिंग मानदंडों के प्रभाव का वैश्विक अन्वेषण। द लांसेट, 393, 2455–68।

- व्हाइट, केएम, स्मिथ, जेआर, टेरी, डीजे, ग्रीनस्लेड, जेएच, एट अल। (2009) नियोजित व्यवहार के सिद्धांत में सामाजिक प्रभावरू वर्णनात्मक, निषेधाज्ञा और समूह मानदंडों की भूमिका, ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशल साइकोलॉजी, 48, 135–58।
- जेनिटिडौ, एम. और एडमंड्स, बी. (संस्करण) (2014) सामाजिक मानदंडों की जटिलता। न्यूयॉर्क स्प्रिंगर.